मिलितहि कुरुख चकत्ता को निरखि कीन्हों
सरजा, सुरेस ज्यों दुचित ब्रजराज को।
भूषण, कुमिस गैर मिसिल खरे किये को,
किये म्लेच्छ मुरछित करि कै गराज को॥

अरे ते गुसलखाने * बीच ऐसे उमराय,
लै चले मनाय महाराज सिवराज को।
दावदार निरखि रिसानों दीह दलराय,
जैसे गड़दार अड़दार गजराज को ॥३४॥

शब्दार्थ—कुरुख = बुरा रुख, अप्रसन्न। चकत्ता = चंगेजखाँ का

---

* इस गुसलखाने वाली घटना का भिन्न-भिन्न इतिहास-लेखकों ने भिन्न भिन्न प्रकार से वर्णन किया है। सभासद और चिटनीस आदि मराठा बखर के लेखकों ने लिखा है कि जब शिवाजी औरंगजेब के दरबार में पहुँचे तब वे अपनी श्रेणी के आगे जोधपुर-नरेश (बुँदेला-मेमायर्स के मतानुसार यह उदयपुर के भीमसिंह जी का पुत्र रामसिंह सीसौदिया था) को देख कर बिगड़ गये और उसे मारने के लिए रामसिंहजी (मिर्जा राजा जयसिंह के पुत्र) से कटार माँगी, उसके न मिलने पर अपमान के कारण शिवाजी बेहोश हो गये और गुसलखाने में लेजाकर इत्र आदि सुँघाने पर इन्हें होश हुआ। ओमी (Orme) ने लिखा है शिवाजी ने सम्राट् की बहुत निन्दा की और पंचहज़ारियों में खड़ा कर देने के कारण क्रोध और अपमान के मारे आत्मघात करना चाहा, परन्तु पास वालों ने रोक दिया। जनानखाने में भाग जाने वाली घटना अमरसिंह राठौर और बादशाह शाहजहाँ की प्रसिद्ध है। शिवाजी और औरंगजेब के विषय में ऐसी घटना होने का वर्णन इतिहास में नहीं मिलता। केवल भूषण कवि ने इसका वर्णन किया है। सम्भव है ऐसा हुआ हो। किसी महाशय ने 'गुसलखाने' का अर्थ गोसलखाँ किया है और इस नाम का कोई व्यक्ति विशेष औरंगजेब का अंग रक्षक माना है, किन्तु "गुसलखाने" के आगे 'बीच' शब्द और होने से उनका गोसलखाँ वाला अर्थ ठीक नहीं बैठता।

वशज, औरङ्गजेब । दुचित्त = दुविधावान, शंकायुक्त । कुमिस = झूठा बहाना । गैरमिसिल = (फा०) अयोग्यस्थान, बेमौके । गराज = गर्जना । दाबदार = मस्त । दीह = (सं० दीर्घ), बड़ा । दलराय = दल का राजा, दलपति, झुंड का मुखिया । गड़दार = भाला ले कर चलने वाले लोग जो मस्त हाथी को घुचकार कर आगे बढ़ाते हैं । अड़दार = मस्त, अड़ियल ।

अर्थ—शिवाजी ने औरङ्गजेब से मिलते ही उसे ऐसा अप्रसन्न कर दिया जैसे सुरेश (इन्द्र) ने ब्रजराज (श्रीकृष्ण) को किया था । भूषण कवि कहते हैं कि झूठे बहाने से बेमौके (अनुचित स्थान पर) खड़ा करने के कारण उन्होंने गर्जना करके सब मुसलमानों को मूर्छित कर दिया । गुसलखाने के निकट अड़ने से (ठिठकने पर) ही सारे उमराव अमीर उनकी खुशामद करके ऐसे ले चले जैसे कि सोटेमार लोग अत्यन्त क्रोधित मस्त अड़ियल बड़े दलपति हाथी को घुचकार करके ले जाते हैं ।

विवरण—इसमें पहले शिवाजी और औरंगजेब (उपमेयों) को क्रमशः इन्द्र और कृष्ण की उपमा दी है, फिर शिवाजी को मस्त हाथी की उपमा दी गई है । इसमें औरंगजेब को श्रीकृष्ण की उपमा देना उचित प्रतीत नहीं होता; वरन् कुछ लोग इसे दोष समझते हैं ।